

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और ईरान से जुड़े युद्ध जैसे हालातों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक बार फिर अस्थिरता के मुहाने पर ला खड़ा किया है। इसका सीधा असर भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ना स्वाभाविक है। विशेष रूप से देश के लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) इस संकट की सबसे कमजोर कड़ी बनकर उभर रहे हैं। ऐसे समय में इन उद्योगों को सहारा देना केवल आर्थिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता की भी अनिवार्यता है।

ऊर्जा और खाद्य संकट की आशंका ने उत्पादन लागत को तेजी से बढ़ा दिया है। भारत की आयातित महंगाई पांच प्रतिशत के पार पहुंच चुकी है, जो इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में लागत आधारित उद्योग और गृहकार्य, मार्च में विदेशी संरक्षण निवेशकों द्वारा 12.7 अरब डॉलर की निकासी यह दर्शाती है कि वैश्विक निवेशकों का भरोसा भी डगमगा रहा है। ऐसे में सबसे पहले झटका

खाड़ी युद्ध; लघु और सूक्ष्म उद्योग को बचाना जरूरी

उन्हीं एमएसएमई को लगता है, जिनकी वित्तीय स्थिति पहले से ही सीमित संसाधनों पर टिकी होती है।

सरकार द्वारा इस स्थिति को संभालने के प्रयास सराहनीय हैं। औद्योगिक संगठनों और छोटे उद्योगों से लगातार संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का आकलन किया जा रहा है। नियात लागत कम करने के लिए 500 करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा और पेट्रोल-डीजल पर कर में कटौती जैसे कदम राहत देने वाले हैं। लेकिन वर्तमान परिस्थितियां यह संकेत देती हैं कि यह प्रयास पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि इन्हें और व्यापक तथा लक्षित बनाने की आवश्यकता है।

कोरोना काल के दौरान लघु की गई इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्क्रीम ने एमएसएमई क्षेत्र को बड़ी राहत दी थी। आज

एक बार फिर वैसी ही पहल की जरूरत महसूस हो रही है। सरकार को चाहिए कि वह प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें आसान शर्तों पर ऋण, पुनर्भुगतान में छूट और कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराए। इसके साथ ही डॉलर के मुकाबले रुपये की स्थिरता बनाए रखने और व्यापार लागत कम करने की दिशा में टोस कदम उठाए जाएं।

युद्ध के कारण पेट्रोकेमिकल्स पर निर्भर उद्योग—जैसे प्लास्टिक, केमिकल्स, टेक्सटाइल और सेरेमिक—पहले ही प्रभावित हो चुके हैं। गैस की कमी और कच्चे माल की महंगाई ने कई छोटे उद्योगों को बंद होने की कगार पर पहुंचा दिया है। इसका सबसे गंभीर प्रभाव श्रमिकों पर पड़ रहा है, जिनका उत्पादन शुरू हो चुका है। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ती है, तो न केवल औद्योगिक उत्पादन प्रभावित होगा, बल्कि

सामाजिक-आर्थिक असंतुलन भी गहराएगा।

यह समझना होगा कि एमएसएमई केवल आर्थिक इकाइयां नहीं हैं, बल्कि वे करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार हैं। एक बार उत्पादन ठप होने पर उसे फिर से पटरी पर लाने में महीनों लग जाते हैं। इसलिए समय रहते हस्तक्षेप करना बेहद जरूरी है। सरकार को वित्तीय सहायता के साथ-साथ वैकल्पिक उद्योगों—विशेषकर पेट्रोकेमिकल्स के विकल्पों, को भी प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसे वैश्विक संकटों का असर कम किया जा सके।

वर्तमान चुनौती अस्थायी जरूरत है, लेकिन इसके प्रभाव दीर्घकालिक हो सकते हैं। इसलिए यह समय त्वरित, निर्णायक और दूरदर्शी नीति हस्तक्षेप का है। यदि देश के लघु और सूक्ष्म उद्योगों को इस संकट से सुरक्षित निकाल लिया गया, तो न केवल अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलेगी, बल्कि भारत की विकास यात्रा भी अविरोध बनी रहेगी।

हर बच्चे के लिए सीखने का नया स्वरूप



धर्मेंद्र प्रधान

हर साल, जब स्कूलों के द्वार नए शैक्षणिक सत्र के लिए खुलते हैं, तो भारत सामूहिक संकल्प के सबसे गहन उदाहरणों में से एक का साक्षी बनता है। पहाड़ों

और तटों से लेकर शहरों और दूरदराज के गांवों तक, लाखों बच्चे कभी-कभी अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों के बावजूद, नए जोश, नई आकांक्षाओं और अपार संभावनाओं के साथ अपनी कक्षाओं में कदम रखते हैं। यह एक शांत लेकिन शक्तिशाली राष्ट्र की शक्ति है। इस वर्ष भी लगभग दो करोड़ बच्चों ने पहली कक्षा में प्रवेश लिया है, जो आशा और एक साझा राष्ट्रीय जिम्मेदारी दोनों को समेटे हुए है।

भारत का स्कूली ढांचा बेहद विशाल है। इसमें 14.7 लाख से अधिक स्कूल, लगभग 25 करोड़ नामांकित छात्र और एक करोड़ से ज्यादा शिक्षक शामिल हैं। ये संख्याएं केवल प्रशासनिक स्तर को मापने का जरिया भर नहीं हैं, बल्कि ये शिक्षा के माध्यम से हमारे देश के भविष्य को गढ़ने की एक मजबूत प्रतिबद्धता की घोषणा करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने रटने की आदत से आगे बढ़कर जिज्ञासा, समझ और समग्र विकास

एक साझा राष्ट्रीय प्रतिबद्धता—शिक्षा एक साझा जिम्मेदारी है। यह सरकारों, स्कूलों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदायों की जिम्मेदारी है। हर बच्चे को सीखने की यात्रा में देखा, सुना और मार्गदर्शन किया जाना चाहिए। हमारी शिक्षा प्रणाली की सच्ची पहचान कुछ चुनिंदा उच्च उपलब्धि हासिल करने वालों से नहीं, बल्कि इस बात से होती है कि प्रारंभिक शिक्षा बिना हर बच्चा आत्मविश्वास और आनंद के साथ सीखता है या नहीं। आइए, समावेशी, नवोन्मेषी और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली के निर्माण के प्रति अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को दोहराएं। साथ मिलकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर कक्षा सपनों को साकार करने का स्थान बने और आने वाले काल के नेताओं का निर्माण हो। 2047 तक विकसित भारत के अग्रदूत आज हमारी कक्षाओं में मौजूद हैं। आइए, उन्हें उड़ान भरने के लिए सुनहरे पंख दें।

(होलिस्टिक डेवलपमेंट) को सीखने के केंद्र में रखा है। हर नया शैक्षणिक सत्र उस सपने को साकार करने की दिशा में एक सार्थक कदम है। बालवाटिका लागू होने से अब छोटे बच्चों की शुरुआती पढ़ाई स्कूल व्यवस्था का हिस्सा बन गई है। इससे बच्चे पहली कक्षा में बेहतर तैयारी और मजबूत बुनियादी कौशल के साथ प्रवेश करते हैं। बच्चे का स्कूल में दाखिला उसके जीवनभर के सीखने और समाज से जुड़ने की शुरुआत होता है। इसलिए जरूरी है कि यह सफर खुशी, अच्छे माहौल और अपनापन महसूस कराने वाला हो। सीखने का सफर—पहले कदम से आत्मविश्वास तक—स्कूल का पहला दिन खास होता है। इसमें थोड़ी झिझक होती है, तो नए शुरुआत की खुशी भी होती है। छोटे-छोटे बच्चे अपने बड़े-बड़े भाव लेकर स्कूल आते हैं और उनकी जिज्ञासा आंखें एक नई दुनिया देखती हैं। जब बच्चे खुद की सुरक्षित और महत्वपूर्ण महसूस करते हैं, तो वे खुलने लगते हैं। वे ज्यादा भाग लेते हैं, सवाल

पूछते हैं और उनकी जिज्ञासा बढ़ती है। धीरे-धीरे उनका आत्मविश्वास भी मजबूत होता जाता है। शुरुआती साल खेल, खोज और नई चीजें सीखने पर आधारित होने चाहिए, यही जीवनभर की सीखने की यात्रा की शुरुआत है। अच्छे रिश्ते बहुत मायने रखते हैं। एक समझदार और देखभाल करने वाला शिक्षक बच्चे की जिंदगी बदल सकता है। सहयोगी कक्षा माहौल बच्चे की चुप्पी को भागीदारी में और भागीदारी को आत्मविश्वास में बदल सकता है। जब बच्चा खुद को सच में समझा और सुना हुआ महसूस करता है, तो उसकी जिज्ञासा हिम्मत में बदल जाती है। और जब उसे अपनापन महसूस होता है, तो वह अपनी आवाज पहचानने लगता है। इन प्रारंभिक वर्षों के केंद्र में बुनियादी साक्षरता और अंकगणित के प्रति एक मजबूत राष्ट्रीय प्रतिबद्धता निहित है। निपुण भारत मिशन के माध्यम से, भारत ने एक स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किया है—कक्षा 2 के अंत तक प्रत्येक बच्चा समझ के साथ पढ़ सके

और बुनियादी अंकगणित कर सके, ध्यान उत्तरों को रटने से हटकर अवधारणाओं को समझने पर केंद्रित है। कक्षाओं को बच्चों के केवल उत्तर दोहराने के बजाय प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह दृष्टिकोण अकादमिक शिक्षा से परे है। कला, खेल और मूल्य सीखने की प्रक्रिया के अनिवार्य अंग हैं। शिक्षा को संपूर्ण बच्चे का निर्माण करना चाहिए—न केवल मन का, बल्कि शरीर और हृदय का भी। शारीरिक गतिविधि और पोषण दैनिक स्कूली जीवन का अभिन्न अंग हैं। एक स्वस्थ बच्चा बेहतर सीखता है, अधिक भाग लेता है और आत्म-सम्मान की स्वस्थ भावना के साथ विकसित होता है।

उभरती चुनौतियों का सामना—वैश्विक स्तर पर, बच्चों की जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। खान-पान की आदतों में बदलाव और शारीरिक गतिविधि में कमी कई देशों के लिए चिंता का विषय बन गई है। भारत इस चुनौती का सक्रिय रूप से सामना कर रहा है। अनिवार्य शारीरिक शिक्षा, स्कूलों में मोटापे से निपटने के लिए ऑल राउंड बोर्ड और शुगर बोर्ड जैसे उपाय और पोषण गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने वाली मजबूत पीएम-पोषण योजना स्कूलों को स्वास्थ्य और सक्रिय जीवनशैली की ओर उन्मुख कर रही है। इन प्रयासों का उद्देश्य एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना है जो स्वास्थ्य को समग्र विकास का केंद्र मानती हो।

(लेखक केंद्रीय शिक्षा मंत्री हैं)

5 दशक बाद फिर चंद्र अभियान प्रारंभ

अमेरिका ने 54 वर्ष बाद अपने चंद्र अभियान का दूसरा अध्याय शुरू करते हुए केनेडी स्पेस सेंटर से एस्पेल्स शक्तिशाली रॉकेट की मदद से अपने 4 एस्ट्रोनाट को चंद्रमा की कक्षा की परिक्रमा करने भेजा है। इस अभियान को ग्रीक देवता आर्टेमिस का नाम दिया गया है। पहले चरण में आर्टेमिस 1 मानव रहित यान 2022 में चंद्रमा की कक्षा में भेजा गया था। आर्टेमिस 2 मुहिम के लिए फरवरी में किए गए परीक्षण में रॉकेट के ऊपर हिस्से में होलियम लीक होने का पता चला तो उसको सुधारा गया। इसके बाद अब आर्टेमिस को सफलतापूर्वक भेजा गया है जिसमें 4 अंतरिक्ष यात्री रीड वाइजमैन, विक्टर ग्लोवर, क्रिस्टीना कोच तथा कनाडा के जेरेमी हैन्सन का समावेश है। यह अंतरिक्ष यान पृथ्वी से 4 लाख किलोमीटर से भी अधिक दूरी पर जाकर चंद्रमा की सतह से 6,400 से 9,400 किलोमीटर अंतर रखकर

उसकी कक्षा की परिक्रमा करेगा। वहां यह अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा का वह हिस्सा देखेंगे जो पृथ्वी से दिखाई नहीं देता। इनकी 11 अप्रैल को पृथ्वी वापसी होगी। अंतरिक्ष यानी रीड वाइजमैन ने कहा कि इस अंतरिक्ष यान से चंद्रमा की ओर जाने वाली आगामी मुहिम के लिए सटीक आकलन होगा व आवश्यक जानकारी मिलेगी। इसके बाद 2028 में चंद्रमा के धरातल पर इंसान को उतारा जाएगा। नासा की यह 10 दिवसीय मुहिम विशेष महत्व रखती है। यहां उल्लेखनीय है कि 1969 में अमेरिका के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रॉंग ने चंद्रमा पर पहला कदम रखा था। उनके सहयात्री माइकल कॉलिनस व एडविन एल्ड्रिन थे। इसके बाद 1968 से 1972 तक अमेरिका ने अपोलो अभियान के तहत अपने अंतरिक्ष यानियों को चंद्रमा पर उतारा था।



है कि 1969 में अमेरिका के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रॉंग ने चंद्रमा पर पहला कदम रखा था। उनके सहयात्री माइकल कॉलिनस व एडविन एल्ड्रिन थे। इसके बाद 1968 से 1972 तक अमेरिका ने अपोलो अभियान के तहत अपने अंतरिक्ष यानियों को चंद्रमा पर उतारा था।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12221 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
	7		8		
9					
		10	11	12	13
	14	15			
16				17	
		18			
19					20

देह के साथ जल मरने वाली स्त्री
ऊपर से नीचे
1. खाकर तुस होना, किसी का माल पचा जाना 2. अति कष्ट, पीड़ा (सं.) 4. रात, निशा 5. देने वाला, दान देने वाला 6. माता का पिता, अनेक प्रकार के 10. श्रृंगाली, गौड़ड़ी, घोड़ी (सं.) 11. पवनपुत्र 13. दृष्टि (उर्दू) 14. वन की अधिष्ठात्री देवी 15. नाड़ी 17. लोहे को सोना बनाने वाला एक कल्पित पत्थर 18. सर्व, शीतकाल

Solution 12220

उ	दा	रा	श	य	आ	जा
जा	व	र				ने
स	गु	ण	ब	अ	श्व	
ना	ल	या	या	व	र	
	द	र	द	र	धा	
प्र	स्ता	व	ना	मु	र	ली
ल		द	द	कु	ण	ल
य	ज	मा	न	ट		ना

बाएं से दाएं
1. बांस की फट्टियों का बना एक पात्र, टोकरी 3. वह थैला या बोरा जिसमें माल रखा जाता है 7. दलील, हेतुपूर्ण युक्ति 8. बताना, आगाह करना 9. आयोजन करना, मेहंदी लगाना 10. प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द 12. मछली, एक राशि 14. बिना पूंछ का बड़ा बंदर जो मनुष्य के आकार का होता है 16. मन, हृदय, रामचरित मानस 17. अंत, सिरा, सामने वाला दूसरा तट 18. प्राणी, पशु 19. भविष्य में होने वाला, होनी 20. पति की मृत

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है
वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी। पद एवं स्थान परिवर्तन के योग है। शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। भौतिक सुख प्राप्त होगा। उत्तरदायित्वों को समझाने की आवश्यकता है। वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यात्रा से कष्ट होगा। वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते हैं। आय में सुधार होगा। भाईयों का सहयोग रहेगा।
मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों

आज जन्म शिशु का भविष्य
आज जन्म लिया बालक सन्दर, सुशील, चंचल और आकर्षित व्यक्तित्व का होगा, अपने माता पिता का ध्यान रखेगा, स्वास्थ्य से चंचल और उग्र होगा, अपने मनमर्जी का मालिक होगा, व्यवसाय आदि में कार्यों में अच्छी रूचि रहेगी।

उदयकालीन ग्रह चाल

8	के.7 सू. चं.यु.	6	शु.	5
9				
	10		4	
		1		3
11	12	2		

पंचांग
रा.मि. 17 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण पंचमी भौमवासरे दिन 2/5, ज्येष्ठा नक्षत्र रात 3/38, व्यतिपात योगे दिन 2/29, तैत्तिल करणे सू.उ. 5/48, सू.अ. 6/12, चन्द्रचार वृश्चिक रात 3/38 से धनु, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7,--

व्यापार भविष्य
वैशाख कृष्ण पंचमी को ज्येष्ठा नक्षत्र के से सोना, चांदी, धातु, आदि गेहूँ, जौ, मटर, ज्वार, में मंदी होगी, गुड़, खाड़, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, में तेजी होगी. भाग्यांक 1408 है.

मेघ-शत्रुओं पर विजय मिलेगी, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त होगा जिससे मन प्रसन्न रहेगा. आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा.
वृषभ- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन होगा, व्यापार लाभदायक से बचें, पारिवारिक चिन्ता रहेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे.
मिथुन- कोई महत्वपूर्ण समस्या दूर होगी, व्यापार लाभदायक रहेगा, खर्च की अधिकता होगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है.
कर्क- राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, नौकरी में लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा, साहस संयम से काम करें.

सिंह- लाभकारी प्रस्ताव मिलेंगे, कोई आपसी व्यक्त आपकी प्रतिष्ठा कर सकता है, इसलिए बहकावे में न आएं, परिवर्तन के योग हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी.
कन्या- अनावश्यक कार्यों में समय नष्ट होगा, किन्तु आपकी सद्बुद्धि और सतर्कता से काम सफल जायेगा, कोई रूका कार्य बनेगा, शुभ सूचना मिलेगी.
तुला- सकारात्मक सोच से होंगे, मामले सुलझे, किसी मांगलिक कार्य में आपकी उपस्थिति सुखद रहेगी, कोई कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी.
वृश्चिक- कामकाज पूरा होगा, कोई कचहरी आदि के कार्यों में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय व खरीदी के कार्यों में सतर्कता बांछनीय, सम्मान मिलेगा.

धनु- कुटुम्बियों से सुख एवं सहयोग मिलेगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, शुभ संदेश प्राप्त होने का योग.
मकर- नये वाहन का सुख मिलेगा, पूज्य व्यक्तिकी सलाह उपयोगी रहेगी, उत्साह बढ़ेगा, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.लेनदेन में लापरवाही न करें.
कुम्भ- लेखनादि कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में उत्साह बना रहेगा, वाद-विवाद से बचें, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, यश मिलेगा.
मीन- नया काम बनेगा, किसी तरह की चोट-मोच आदि से बचें, मांगलिक कार्य की ओर रुखन रहेगी, लेनदेन में लापरवाही से हानि होगी.

